Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 5886–5890

AN ANALYTICAL STUDY OF THE ROLE OF WOMEN OF HARYANA IN THE INDIAN FREEDOM STRUGGLE

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका का एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन

Anju Singh [1], Mamta Devi [2]

[1] Research Scholar, Department of Political Science, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana, India
[2] Assistant Professor, Department of Political Science, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana, India

ABSTRACT

English: Against British colonialism, Indians across India united and challenged the world's most powerful imperialist power by forgetting the differences of language, religion, caste, region, rich-poor and gender. After a long and tough struggle and sacrifices, we achieved independence. The people of Haryana also participated enthusiastically in this long struggle. In which women undoubtedly suffered more. Because their role in the national freedom struggle was multifaceted. Extensive research has been done on various aspects of the national movement and research work is going on on many incidents. But still understanding the role of Haryana in the national movement, especially the role of women of Haryana region, is an untouched area. The purpose of this research article is to fill this research gap and to do a systematic historical analysis of the participation of women of Haryana in the national freedom movement. The research material for this research article has been taken from various books related to history, freedom struggle, women's movements and women's organizations, articles published in various journals and magazines and research articles etc. from secondary sources.

Hindi: ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ सम्पूर्ण भारत में भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, अमीर-गरीब और लिंग भेद भुलाकर भारतीयों ने एकजुट होकर दुनियां की सबसे शक्तिशाली साम्राज्यवादी शक्ति को चुनौती दी। कठोर लम्बे संघर्ष और बलिदानों के बाद, हमें स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई । इस लम्बें संघर्ष में हरियाणा प्रदेश के लोगों ने भी बढ़- चढ़कर भाग लिया। जिसमें निसंदेह महिलओं ने अधिक कष्ट सहन किये। क्योंकि राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका बहुमुखी थी । राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक ढंग से शोधकार्य हुआ है तथा कई घटनाओं पर शोधकार्य जारी है । लेकिन अभी भी राष्ट्रिय आन्दोलन में हरियाणा की भूमिका विशेषकर हरियाणा क्षेत्र की महिलाओं की भूमिका को समझना एक अछूता क्षेत्र है। इस शोध आलेख का उद्देश्य इसी शोध अन्तराल को पूरा करना है तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हरियाणा की महिलाओं की भागीदारी का व्यवस्थित ढंग से एतिहासिक विश्लेषण करना है। इस शोध आलेख के लिए शोध सामग्री इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम, महिला आन्दोलनों और महिला संगठनों से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे आलेखों तथा शोध आलेखों आदि द्वितीय स्त्रोतों से ली गई है।

Keywords: Haryana, National Movement, Women, Participation, Role हरियाणा, राष्ट्रीय आन्दोलन, महिलाएँ, भागीदारी, भूमिका

Corresponding Author

Anju Singh,
anju.rs.polsc@mdurohtak.ac.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.6277

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

आजादी के आंदोलन के दौरान महिलाओं को पहली बार घर से बाहर किसी गतिविधि में भाग लेने का मौका मिला। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को बार- बार यह कहकर जोड़ा गया कि जब तक महिलाओं की भीतरी शक्ति बाहर नहीं आएगी, बलिदान अधूरा ही रहेगा। इस तरह के आग्रह में बुनियादी समस्या ये थी कि परम्परागत रूप से महिलाओं को घर तक सीमित रखा गया था। उनकी क्षमताओं को दबाकर रखा गया था। गान्धी जी ने

इस समस्या का समाधान निकाला। उन्होंने आंदोलन को धर्म से जोड़कर अहिंसात्मक आंदोलन बनाया जिसमें धैर्य, त्याग तथा पीड़ा सर्वोपरि थे और जो मुख्यतः महिलाओं के गुण माने जाते हैं। गाँधी के भारतीय राजनीति में प्रवेश ने महिलाओं को आंदोलित किया। 1857 की क्रांति से लेकर 1920,1930 और 1942 के राष्ट्रव्यापी जन आन्दोलनों में महिलाओं ने स्वतंत्रता की बलि वेदी पर सहर्ष अपने प्राण निछावर किए और असंख्य स्वतंत्रता संग्रामी महिलाओं ने अपनी कुर्वानियों से समस्त नारी समुदाय को गौरवान्वित किया।

2. स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा

स्वतंत्रता आन्दोलन में हरियाणा का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। वैसे तो छठी-सातवीं शताब्दी में भी हरियाणावासी विदेशी आक्रांताओं से जूझते रहे। हरियाणा के प्रथम चक्रवर्ती सम्राट हर्षवर्धन के पश्चात् स्थाण्वीश्वर (थानेसर) के महाराज हर्ष ने देश की गौरव रक्षा के अनेक प्रयास किये। पृथ्वीराज चैहान ने विदेशी हमलावरों से निर्णायक टक्कर ली। सोलहवीं शताब्दी में पानीपत में विदेशी हमलावरों से कड़ी टक्कर हुई थी। दिल्ली में विदेशी हुकूमतों के आने के बाद भी हरियाणा का संघर्ष जारी रहा। बलिदानी परम्परा भी जारी रही। बन्दा बैरागी पानीपत के मैदान में ही आततायियों से जूझा था। मराठों से मिलकर भी हरियाणा के रणबांकुरों ने आजादी और अस्मिता की रक्षा का संघर्ष जारी रखा। 1857 में भी इस अंचल ने अपना दायित्व निभाया। 1857 में अम्बाला, करनाल, गुड़गांव, रोहतक, रेवाड़ी, हिसार जिलों में आजादी के दीवानों ने विदेशी हुकूमत के खिलाफ अपना संघर्ष गांव-गांव तक जारी रखा। इसकी एक लम्बी दास्तान है। गांव-गांव में हुए अनेक घटनाक्रम इतिहास में दर्ज हैं। साहस, त्याग और बलिदान की यह लम्बी गाथा है। रेवाड़ी के राव तुलाराम 1857 की क्रान्ति के महानायक थे, जिन्होंने अंग्रेजों से खुली टक्कर ली। 1857 के बाद भी 1947 तक हरियाणा की देश की आजादी के संघर्ष में सक्रिय भूमिका रही। महात्मा गांधी के नेतृत्व में जनान्दोलनों एवं सत्याग्रहों में हरियाणवी सदैव आगे रहे। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में हरियाणावासियों की संख्या सर्वाधिक थी।

गांधीजी के अहिंसक आन्दोलनों में भी हरियाणवी किसी से पीछे नहीं रहे। सर छोटूराम एवं नेकीराम सहित अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों की प्रमुख भूमिका रही। अंग्रेजी राज की गोलियों और संगीनों से जो खून बहा, उसी से भारत की आजादी के पौधे को जीवन मिला।[1]

2.1. हरियाणा की महिलाएं और स्वतंत्रता संग्राम

हमारे देश में जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन चला उसमें महिलाओं ने भी पूरी हिम्मत और वीरता के साथ अपना भरपूर व सक्रिय योगदान दिया। हरियाणा की महिलाओं का इस स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने का दृढ़ संकल्प तथा तीव्र इच्छा शक्ति इन शब्दों से व्यक्त होती है-

''मैं छोरी सू जोस भरी हरियाणा की,
मैंने परवाह नही, आजादी खातर,जान गवाने की।''

गुलामी से मुक्ति पाने के लिए अन्य देशवासियों के समान ही हरियाणा की महिलाएं भी दृढ़ता से तैयार थी, तभी तो उन्होंने अपने सपूतों, प्रियजनों और परिवारजनों को आजादी की लड़ाई में वीर योद्धा बनने के लिए उत्साह भरा। इस स्वतंत्रता संग्राम में अग्रेजों के अत्याचारों के शिकार कितने ही वीर सेनानियों के बारे में कोई सूचना जब घर तक नही पहुच पाती थी, तब ऐसे नोजवानों की पत्नियां अपनी मानसिक पीड़ा निम्न भावों में व्यक्त करती थी-

'' मैं क्यूँकर करू सिंगार, मेरा कालजा धड़कै,
मेरे छूट गए भरतार, गोरा के जुल्म नै सह कै।''

ऐसा नहीं है कि हरियाणा की महिलाओं का केवल माँ, बहन, पत्नी के रूप में हरियाणा के वीरों को केवल प्रोत्साहित करने में और उनके पीछे से पारिवारिक दुखों को झेलने में ही योगदान रहा हो। 1857 कि क्रान्ति के शहीदों में एक नाम गुड़गांव के पास गांव की रहने वाली भारती का मुख्य रूप से आता है। जिसने प्रतिशोध लेने के लिए अंग्रेजी सेना के कर्नल आर्मस्ट्रांग के प्राण केवल खुरपे के एक वार से ही ले लिए थे। बाद में वह स्वयं भी शहीद हो गई थी।[2] मानी (आवास गुड़गांव), बेधी(आवास रसूलपुर), रतना (ग्राम नागली, गुड़गांव) आदि महिलाओ ने भी 1857 की क्रांति में भाग लिया, सरकार द्वारा पकड़ी गई तथा हँसते हँसते फांसी के फंदे पर झूल गई।[3]

[1] शर्मा, राधेश्याम,'' आजादी के संघर्ष की चिनगारी जो ज्वाला बन गयी'', हरिगन्धा, मई, 2007, पेज न.11.
[2] नागर, डॉ शीला,''स्वतंत्रता-संग्राम में हरियाणा की महिलाएं'', हरिगन्धा, जनवरी-फरवरी,1993,पेज न.10.
[3] शर्मा, डॉ वनती, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणवी नारी का योगदान'', हरिगन्धा, सितम्बर- अक्टूबर, 1992, पेज न.-61

आर्य- समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद की शिक्षाओं का भी हरियाणा की महिलाओं पर विशेष प्रभाव पड़ा। आर्य समाज की पहली शाखा 1880 में रेवाड़ी में और बाद में रोहतक, हिसार, अंबाला, करनाल और गुड़गांव आदि में स्थापित की गई। इसके अलावा, ये इस क्षेत्र के कई गांवों और कस्बों में भी खोली गईं। समाज के पुनर्निर्माण और परिवर्तन के उद्देश्य से इसने स्त्री शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया। आर्य समाज ने महिलाओं में राजनीतिक जागृति भी पैदा की।

आर्य समाजी परिवारों की कुछ महिलाएँ समाज की राजनीतिक-धार्मिक सभाओं में भाग लेने लगीं।'[4] इनमें राम राज दत्त की पत्नी सरला देवी चैधरानी, लाहौर के लाला रोशन लाल की पत्नी हर देवी, अंबाला के लाला दुनी चंद की पत्नी भाग देवी, हिसार के लाला श्याम लाल की पत्नी चांद बाई, हिसार की पुरानी देवी, लक्ष्मी आर्य, चित्रा देवी, रोहतक की कस्तूरी बाई आदि।[5] हरियाणा आर्य- समाज की महिला कार्यकर्ता पुरानी देवी (हिसार से) का नाम विशेष रूप से लिया जाता है जिन्होंने प्रदेश के विभिन्न शहरों और गांवों का दौरा किया और महिलाओं को अधिक से अधिक समय और साधन राष्ट्र- निर्माण तथा स्वतंत्रता प्राप्ति में लगाने का आह्वान किया।[6]

असहयोग आंदोलन के दौरान गांधी जी हरियाणा क्षेत्र के भिवानी जिले में दो बार आए।[7] पहली बार 22-24 अक्तूबर 1920 में वे 'अम्बाला डिवीजनल पॉलिटिकल कांफ्रेस' में आए। इस कांफ्रैंस में 10 हजार से अधिक लोग उपस्थित थे जिनमें महिलाओं की संख्या 500 से अधिक थी। दूसरी बार गांधी जी ने भिवानी में 15 फरवरी 1921 ई. को 'डिवीजन रुरल कांफ्रेंस' को सम्बोधित किया। इस कांफ्रेंस में उपस्थित लोगों की संख्या 20 हजार के लगभग थी। जिनमें महिलाओं की संख्या लगभग 5,000 थी। इसी आंदोलन के दौरान कमला देवी व चुलादेवी के नेतृत्व में भिवानी 'महिला व वालिंटियर कोर' की स्थापना भी की।[8] हिसार में चांद बाई पहली महिला थी जिसने असहयोग आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[9] इस आन्दोलन के दौरान चाँद बाई (हिसार) को 6 महीने, भाग्यदेवी (अम्बाला) को 8 महीने, कमला देवी (भिवानी) को 6 महीने की जेल मिली। चाँद बाई ने तो 1923, 1924 व 1925 के कांग्रेस अधिवेशन में भी भागीदारी की। उनके बन्दी बनाये जाने से आन्दोलन कमजोर नहीं हुआ बल्कि लोकप्रिय हुआ। महिलाओं ने इसमें यथासम्भव धन ही नहीं दिया बल्कि तिलक स्वराज फण्ड के लिए अपने आभूषण भी दिए। 5 फरवरी की चोरा- चोरी की घटना के बाद असहयोग आन्दोलन वापिस ले लिया।[10]

नमक सत्याग्रह में कस्तूरा बाई ने रोहतक में जेल के समक्ष धरना दिया । लाठी चार्ज के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया तथा उसे चार महीने की कैद हुई।[11]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की गतिविधियों में जेल जाने वाली महिलाओं में अम्बाला की आशा देवी को तीन महीने, रामप्यारी को 4 महीने, विद्यावती को 2 महीने, रोहतक की चित्रा देवी को 1930 में नौ महीने 1932-33 में 1 वर्ष, कस्तुरा बाई को पहले 1932 में 4 महीने तथा 1933 में 1 वर्ष, धापा देवी को 6 महीने भिवानी की मोहनी देवी को 6 महीने व सोनीपत की धनकौर को 2 वर्ष व लीलावती को साढ़े सात महीने की जेल हुई। इस आन्दोलन में अपने पतियों के साथ एक सप्ताह से एक महीने की जेल जाने वाली महिलाओं की संख्या 200 से भी अधिक थी।[12]

1942 में गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया। जिसमें गांधी ने करो या मरो तथा अंग्रेजो भारत छोड़ो का नारा दिया। इस आन्दोलन के दौरान भी हरियाणा क्षेत्र सक्रिय रहा।[13] इस आन्दोलन के दौरान रोहतक की कस्तुरा बाई को 15 महीने की जेल मिली । जबकि मन्नी देवी ने एक वर्ष की जेल काटी। रोहतक जिले के भालौट गांव के हरि राम ने देश भक्ति का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। उसने अपने घर का सारा सामान व पशु इत्यादि बेचकर घर को ताला लगा दिया। उनके साथ उनकी पत्नी नाहरी देवी बच्चे तथा बूढ़ी माता भी सत्याग्रही बनी। वे सभी लगभग एक वर्ष जेल में रहे।

भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान अम्बाला की सत्यबाला व आशा देवी ने तीन महीने, भिवानी की राधा देवी, मोहनी देवी, परमेश्वरी व फुला देवी ने 6 महीने की जेल काटी उसके साथ जेल में उसकी दो पुत्री रूकमणी व मालती भी थी। इसी तरह हिसार की भगवानी देवी व तारावती को 6 महीने, रोहतक की कलावती देवी को 6 महीने कैद व 500 रुपए जुर्माना, नान्ही देवी को 6 महीने, फूल देवी को 4 महीने, सोनीपत थाना खुर्द की धनकौर को 1 वर्ष, लीलावती सिंहल को दो वर्ष (रोहतक व लाहौर) सरती, शान्ती, सुखदेई, सुमन, दड़का तथा दाक्खाया देवी ने तीन महीने की जेल काटी ।

[4] यादव, आर. एस, स्वामी, आर. जे,''आर्य समाज एंड नेशनल अवेकनिंगः ए स्टडी ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन हरियाणा'', जनरल ऑफ हरियाणा स्टडीज, वॉल्यूम- 24,1992, पेज न.67.

[5] कुमारी, डॉ निर्मला,'' द रोल ऑफ वुमन इन फ्रीडम मूवमेंट इन इंडियाः ए केस स्टडी ऑफ हरयाणा'', स्वराज कथा, पेज न.-176.

[6] नागर, डॉ शीला,''स्वतंत्रता-संग्राम में हरियाणा की महिलाएं'', हरिगन्धा, जनवरी-फरवरी,1993,पेज न.11.

[7] शर्मा, एस. के.(एडिड),'' हरियाणा पास्ट एंड प्रेजेंट'', मित्तल पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली,2005, पेज न.-276.

[8] सिंह, डॉ महेंद्र, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका'', जनरल ऑफ पीपल एंड सोसाइटी ऑफ हरियाणा, वॉल्यूम - 3, न.1,अप्रैल,2012,पेज न.-68.

[9] शर्मा, डॉ वनती, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणवी नारी का योगदान'', हरिगन्धा, सितम्बर- अक्टूबर, 1992, पेज न.- 62.

[10] सिंह, डॉ महेंद्र, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका'', जनरल ऑफ पीपल एंड सोसाइटी ऑफ हरियाणा, वॉल्यूम - 3, न.1,अप्रैल,2012,पेज न.-69.

[11] नागर, डॉ शीला,''स्वतंत्रता-संग्राम में हरियाणा की महिलाएं'', हरिगन्धा, जनवरी-फरवरी,1993,पेज न.12.

[12] सिंह, डॉ महेंद्र, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका'', जनरल ऑफ पीपल एंड सोसाइटी ऑफ हरियाणा, वॉल्यूम - 3, न.1,अप्रैल,2012,पेज न.-70.

[13] सरस्वती, स्वामी ओमानन्द, ''भारत छोड़ो आंदोलन में हरियाणा का योगदान'', हरिगन्धा, जुलाई- अगस्त,1993, पेज न.- 17.

3. सवैधानिक उपबंध

भारत का सँविधान अब तक के सबसे महान दस्तावेजों में से एक 1950 में लागू हुआ, सभी नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता और समानता की गारंटी देता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, लोकतंत्रात्मक, धर्म निरपेक्ष, समाजवादी, गणराज्य बनाने तथा सब नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय तथा विचार रखने तथा प्रकट करने, विश्वास, धर्म और पूजा की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा व अवसर की समानता प्राप्त करने तथा उन सब में व्यक्ति का समान और राष्ट्र की एकता तथा बंधुता को बढ़ाने का संकल्प किया गया हैं। भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों में धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान या इनमें से किसी के आधार पर भेदभाव न करने और राज्य के अधीन समान अवसर उपलब्ध करने की व्यवस्था गई हैं। इसी प्रकार नीति निर्देशक तत्वों में भी समान कार्य के लिए समान वेतन महिलाओं के लिए विशेष सुविधाएँ जुटाने संबंधी प्रावधान किये गये हैं। [14]

भारत के सँविधान का अनुछेद 325 और 326 के अनुसार,प्रत्येक वयस्क नागरिक को,जो पागल या अपराधी न हो मताधिकार प्राप्त है।किसी नागरिक को धर्म,जाति,वर्ण,सम्प्रदाय अथवा लिंग भेद के कारण मताधिकार से वंचित नही किया जा सकता है।'' [15]

सर्वाधिक क्रान्तिकारी कदम के रूप में 1992 में 73वां एवं 74वां संविधान संशोधन अधिनियम रहा जिसमें स्थानीय स्वशासन में दो स्तरों ग्रामीण एवं नगरीय संस्थाओं में अध्यक्ष एवं सदस्य पदों पर महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटों का आरक्षण की व्यवस्था की गई।[16] इसके अतिरिक्त संसद एवं राज्य विधानमण्डलों में भी 33 प्रतिशत सीटों पर आरक्षण संबंधी विधेयक 2023 में पारित हो गया है जो 2026 में परिसीमन के बाद लागू होगा।[17]

4. निष्कर्ष

आजादी का आंदोलन त्याग और बलिदान व संघर्ष की कहानी है। इसमें महिलाओं की भागीदारी भी बहुत अधिक थी। जिसमें हरियाणा की महिलाओं ने भी बढ चढ़कर भाग लिया। जिन- जिन परिवारों से पुरुषों की सहभागिता राष्ट्रीय आंदोलन में रही। उनमें महिलाएं भी पीछे नही थी। कुछ शिक्षित महिलाएं ऐसी भी थी जो स्वतंत्र रूप से आजादी के आंदोलन से जुड़ी। अतः आजादी के आंदोलन में जो दमन चक्र चला, उसका महिलाओं पर दोहरी मार पड़ी , एक तो परिवार के सदस्यों को खोने का दुःख और अकेले परिवारिक जिम्मेदारियों का वहन दूसरा स्वयं भागीदारी करने पर कारावास की सजा के रूप में।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहना सार्थक है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हरियाणा के पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी पूरी हिम्मत और वीरता के साथ अपना भरपूर व सक्रिय योगदान दिया है। महिलाओं के सहयोग के बिना आजादी का सपना अधूरा था। महात्मा गांधी ने महिलाओं को राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। गांधी का मानना था कि स्त्री में अहिंसा की ताकत पुरुष से अधिक होती है और यदि महिला आंदोलन से जुड़ेगी तो पूरा परिवार जुड़ेगा। अतः महिलाओं ने महात्मा गांधी की इस भविष्यवाणी को साकार करके दिखा दिया और अपने अधिकारों और उत्तरदायित्य को समझते हुए सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आदोलन में भाग लेकर आजादी की लड़ाई को सफल बनाया। उन सीधी-सादी और निरक्षर महिलाओं के बलिदान भी उल्लेखनीय है जो राजनीति की बारीकियां न जानते हुए भी देश की आजादी की कीमत समझती थी और जिन्होंने अपने बेटों और पतियों को आजादी की लड़ाई में भेजकर स्वयं को गौरवान्वित किया ।

संदर्भ

नागर, डॉ शीला,''स्वतंत्रता-संग्राम में हरियाणा की महिलाएं'', हरिगन्धा, जनवरी-फरवरी,1993
शर्मा, डॉ वनती, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणवी नारी का योगदान'', हरिगन्धा, सितम्बर- अक्टूबर, 1992,
यादव, आर. एस, स्वामी, आर. जे,''आर्य समाज एंड नेशनल अवेकनिंग: ए स्टडी ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन हरियाणा'', जनरल ऑफ हरियाणा स्टडीज, वॉल्यूम- 24,1992,
कुमारी, डॉ निर्मला,'' द रोल ऑफ वुमन इन फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया: ए केस स्टडी ऑफ हरयाणा'', स्वराज कथा, 2012
शर्मा, एस. के.(एडिड),'' हरियाणा पास्ट एंड प्रेजेंट'', मित्तल पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली,2005
सिंह, डॉ महेंद्र, ''स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका'', जनरल ऑफ पीपल एंड सोसाइटी ऑफ हरियाणा, वॉल्यूम - 3, न.1,अप्रैल,2012
सरस्वती, स्वामी ओमानन्द, ''भारत छोड़ो आंदोलन में हरियाणा का योगदान'', हरिगन्धा, जुलाई- अगस्त,1993

[14] विजय, संगीत,''महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता: एक तुलनात्मक अध्ययन'', नवजीवन पब्लिकेशन,जयपुर, 2011, पेज न.- 62.

[15] महेश कुमार बर्णवाल, शलेन्द्र कुमार रस्तोगी,''भारतीय सँविधान एवं राजव्यवस्था'', कोसम्स प्रकाशक, मुखर्जीनगर,दिल्ली

[16] यादव, राजेन्द्र, खेतान, प्रभा, दुबे, अभयकुमार (सम्पादक),'' पितृसत्ता के नये रूप'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पेज न.-200.

[17] दैनिक भास्कर, सितम्बर 24, 2023

विजय, संगीत,''महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता: एक तुलनात्मक अध्ययन'', नवजीवन पब्लिकेशन,जयपुर, 2011
महेश कुमार बर्णवाल, शलेन्द्र कुमार रस्तोगी,''भारतीय सँविधान एवं राजव्यवस्था'', कोसम्स प्रकाशक, मुखर्जीनगर,दिल्ली,2022
यादव, राजेन्द्र, खेतान, प्रभा, दुबे, अभयकुमार (सम्पादक),'' पितृसत्ता के नये रूप'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
दैनिक भास्कर, सितम्बर 24, 2023
चोधरी, डी. आर., "हरियाणा की दुविधाः समस्याएं और संभावनाएं",नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,नई दिल्ली,2007
आर्य साधना, मेनन निवेदिता, लोकनीता जिनि द्वारा संपादित, ''नारी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे'', हिंदी माध्यम कार्यालय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय,2010.
राजेन्द्र, ''स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाओं और उनके बलिदानों की कहानी'', हरिगन्धा जनवरी-फरवरी, 1994
सिंह, मीनाक्षी, ''स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं'' मेहन्द्र बुक कम्पनी, गुड़गांव हरियाणा, 2013
शर्मा, राधाकृष्णना, ''नेशनलिज्म सोशल रिफॉर्म एंड इंडियन वीमेन'', जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
सिंह, गणपति, 'भारत छोडो आंदोलन 1947 की अगस्त क्रांति'', हरिगन्धा जुलाई-अगस्त, 1993
शर्मा, राधेश्याम,'' आजादी के संघर्ष की चिनगारी जो ज्वाला बन गयी'', हरिगन्धा, मई, 2007